International Journal of Education and Science Research Review
E-ISSN 2348-6457
Volume-2, Issue-1 February- 2015 P-ISSN 2348-1817
www.ijesrr.org Email- editor@ijesrr.org

उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों पर जनसंचार माध्यमों के प्रभाव का अध्ययन

डॉ राजेन्द्र प्रसाद झाझडिया
H.O.D. Faculty of Education
JJT University
Chudela, Jhunjhunu (Rajasthan)

प्रस्तावना

शिक्षा की प्रक्रिया एक अद्वितीय प्रक्रिया है। इस प्रक्रिया में कम से कम दो व्यक्ति शामिल होते है। शिक्षक और विद्यार्थी। शिक्षक अपने विचारों का सम्प्रेषण करता है और विद्यार्थी उन्हें गृहण करता है। यदि शिक्षक अपने विचारों को इस प्रकार से रख सके कि वह सरलता से विद्यार्थी के समक्ष में आ जाये तो शिक्षण समझा जाता है। यदि ऐसा नहीं है तो शिक्षण असफल समझा जाता है। इस प्रक्रिया में जो मुख्य अवधारणा निहित है वह है सम्प्रेषण या संचार की । सम्प्रेषण या संचार एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें शिक्षक अपने विचारों को विद्यार्थियों के पास संचारित करके अपने विचारों को विद्यार्थियों के पास संचारित करके क्रिया करते है। यह संचारण शाब्दिक या अशाब्दिक प्रकार से हो सकते है। विद्यार्थी उन विचारों के प्रति प्रतिक्रिया करते है जिनकों सुनकर या उनका प्रत्यक्षीकरण करके वह शिक्षक को यह सूचना देता है कि उसने शिक्षक के विचारों का सम्प्रेषण किया है और यदि ऐसा नहीं होता तो शिक्षक अपनी सम्प्रेषण की विधि में सुधार लाकर फिर उन विचारों को सम्प्रेषित करता है। यह विचारों का आदान प्रदान उस समय तक चलता रहता है जब तक कि शिक्षक जो ज्ञान विद्यार्थियों तक पहुँचाना चाहता है वह उनके द्वारा ग्रहण न कर लिया जाये। अर्थात संचार की प्रक्रिया शिक्षक और शिक्षार्थी दोनों को शामिल करती है।

किसी भी शिक्षक की यह प्रबल इच्छा रहती है कि उसका शिक्षण कार्य अति प्रभावशाली हो। उसी उद्देश्य को ध्यान में रखकर आजकल शिक्षण में सहायक सामग्री का प्रयोग प्रचुर मात्रा में किया जा रहा है। इसमें सैद्धांतिक मौखिक एवं नीरस पाठों को सहायक उपकरणों के प्रयोग से अधिक स्वाभाविक मनोरंजन तथा उपयोगी बनाया जा सकता है। वास्तव में यह सच है कि सहायक सामग्री का उद्देश्य श्रवण एवं दृष्टि की ज्ञानेन्द्रियों को सक्रिय बनाकर ज्ञान ग्रहण करने के मार्ग खोल देता है।शिक्षा में ज्ञानेन्द्रियों पर आधारित ज्ञान ज्यादा स्थायी माना गया है। श्रव्य–दृश्य सामग्री में भी ज्ञानेन्द्रियां द्वारा शिक्षा पर बल दिया जाता है। नवीन वस्तुंओं के बारे में जानने की स्वाभाविक जिज्ञासा होती है। श्रव्य दृश्य सामग्री में नवीनता का प्रत्यय निहित रहता है। फलस्वरूव छात्र सरलता से नया ज्ञान प्राप्त करने में समर्थ होते है। तथा पाठ में रूचि उत्पन्न होती है जिससे वे प्रेरित होकर नया ज्ञान प्राप्त करने के लिए लालायित हो जाते है।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

पुरातन काल से वर्तमान काल तक प्रत्येक शिक्षक का यह प्रयास रहा है कि वह अपने शिक्षण कार्य को अधिक प्रभावी बनाये। वे अधिगम को प्रभावशाली बनाने के लिए शिक्षण में अनेक विधियों, युक्तियों, जनसंचार के माध्यमों का प्रयोग करते है इनके प्रयोग से शिक्षण अधिक रोचक, स्पष्ट, अर्थपूर्ण तथा सरल हो जाता है। क्या इन जनसंचार के माध्यमों के प्रभाव से विद्यार्थियों की अधिगम क्षमता बढ़ रही है या फिर इनके उपयोग से समय व धन दोनों की बर्बादी हो रही है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली में यें संचार के माध्यम कितने उपयोगी सिद्ध हो रहे है। आदि विभिन्न प्रकार के प्रश्न शोधकर्त्ता के मन में उठे इसलिए उसने इस प्रकरण की आवश्यकता समझकर इसका चयन किया।

समस्या का कथन

'' उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों पर जनसंचार माध्यमों के प्रभाव का अध्ययन।'

लघुशोध के उद्देश्य

- उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं पर जनसंचार माध्यमों के प्रभाव का अध्ययन करना।
- उच्च माध्यमिक स्तर के शहरी छात्र एवं छात्राओं पर जनसंचार माध्यमों के प्रभाव का अध्ययन करना।
- उच्च माध्यमिक स्तर के ग्रामीण छात्र एवं छात्राओं का जनसंचार माध्यमों के प्रभाव का अध्ययन करना।

प्रस्तुत शोध में प्रयुक्त परिकल्पनाएं

- उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं पर जनसंचार माध्यमों के प्रभाव में सार्थक अन्तर नहीं है।
- उच्च माध्यमिक स्तर के शहरी छात्र एवं छात्राओं पर जनसंचार माध्यमों के प्रभाव में सार्थक अन्तर नहीं है।
- उच्च माध्यमिक स्तर के ग्रामीण छात्र एवं छात्राओं पर जनसंचार माध्यमों के प्रभाव में सार्थक अन्तर नहीं है।

अध्ययन में प्रयुक्त न्यादर्श
प्रयुक्त अध्ययन में यादृच्छिक विधि से शोधकर्त्ता के न्यादर्श का चयन किया है। शोधकर्त्ता ने झुन्झुनू जिले के उदयपुरवाटी क्षेत्र के उच्च माध्यमिक विद्यालयों से 120 विद्यार्थियों का चयन किया है।

अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण
प्रस्तुत लघुशोध में शोधकर्त्ता ने अध्ययन हेतु स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया है।

लघुशोध में प्रयुक्त विधि
प्रस्तुत शोधकाय्र मे शोधकर्त्ता ने वर्णनात्मक अनुसंधान विधि के अन्तर्गत सर्वेक्षण विधि को काम में लिया है।

शोध में प्रयुक्त सांख्यिकी
1. मध्यमान 2. मानक विचलन 3. मानक त्रृटियों का अन्तर
4. आलोचनात्मक अनुपात का प्रदर्शन।
5. मध्यमानों का अन्तर इत्यादि का प्रयोग किया है।

प्रस्तुत अध्ययन के प्रदत्तों का वर्गीकरण, विश्लेषण एवं व्याख्या –
शोधकर्त्री ने प्रस्तुत शोध को परिकल्पनाओं के अनुसार विश्लेषित करने के लिये निम्नानुसार सारणियों में वर्गीकृत किया है–
परिकल्पना – उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं पर जनसंचार माध्यमों के प्रभाव में सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी संख्या 1

विद्यार्थी	N	M	S.D.	$S.E_D$	T	D	सार्थकता स्तर
छात्र	60	106.77	13.09	2.22	3.76	8.36	हाँ
छात्रा	60	115.13	11.14				

विश्लेषण – उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं पर जनसंचार माध्यमों के प्रभाव के प्राप्तांकों का मध्यमान क्रमशः 106.77 व 115.13 है तथा दोनों समूहों का मानक विचलन क्रमशः 13.099 व 11.1143 है। दोनों समूहों की मानक त्रुटियों का अंतर 2.22 तथा मध्यमानों का अंतर 8.36 है। दोनों समूहों के प्राप्ताकों का आलोचनात्मक अनुपात (टी) 3.76 है जो कि 118 स्वतंत्रता के अंश के हेतु 0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक 2.62 से अधिक है। अतः परिकल्पना एक अस्वीकृत होती है, अर्थात उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं पर जनसंचार माध्यमों के प्रभाव में सार्थक अन्तर है। मध्यमानों का अन्तर देखने पर पता चलता है कि जनसंचार माध्यमों का प्रभाव छात्राओं पर छात्रों की तुलना में अधिक पड़ता है। इसका कारण यह है कि छात्राएं जनसंचार माध्यमों में अधिक रूचि रखती है। वह टेलीविजन, रेडियो, कम्प्यूटर आदि पर छात्रों से अधिक समय तक कार्यक्रम देखती है।

2. परिकल्पना – उच्च माध्यमिक स्तर के शहरी छात्र एवं छात्राओं पर जनसंचार माध्यमों के प्रभाव में सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी संख्या 2

विद्यार्थी	N	M	S.D.	$S.E_D$	T	D	Df	सार्थकता स्तर
शहरी छात्र	30	111.37	11.87	3.11	0.012	0.2	58	नहीं
शहरी छात्रा	30	111.33	12.253					

विश्लेषण – उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि उच्च माध्यमिक स्तर के शहरी छात्र एवं छात्राओं पर जनसंचार माध्यमों के प्रभाव के प्राप्तांकों का मध्यमान क्रमशः 111.37 व 111.33 है तथा दोनों समूहों का मानक विचलन क्रमशः 11.87 व 12.253 है। दोनों समूहों की मानक त्रुटियों का अंतर 3.114 तथा मध्यमानों का अंतर 0.04 है। दोनों समूहों के प्राप्ताकों का आलोचनात्मक अनुपात (टी) 0.012 है जो कि 58 स्वतंत्रता के अंश के हेतु 0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक 2.66 से कम है। अतः परिकल्पना दो स्वीकृत होती है, नहीं है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि शहरी छात्र एवं छात्राओं पर जनसंचार माध्यमों का प्रभाव लगभग बराबर पड़ता है जनसंचार माध्यमों का प्रभाव शहरी छात्र एवं छात्राओं पर लगभग बराबर पड़ता है। इसका कारण है कि दोनो जनसंचार माध्यमों में समान रूप से रूचि लेते है तथा शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों को इन साधनों की सुविधा भी अधिक मिलती है।

3. **परिकल्पना** – उच्च माध्यमिक स्तर के ग्रामीण छात्र एवं छात्राओं पर जनसंचार माध्यमों के प्रभाव में सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी संख्या 4.3

विद्यार्थी	N	M	S.D.	$S.E_D$	T	D	Df	सार्थकता स्तर
ग्रामीण छात्र	30	102.17	13.181	2.84	5.88	16.76	58	हाँ
ग्रामीण छात्रा	30	118.93	8.326					

विश्लेषण – उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि उच्च माध्यमिक स्तर के ग्रामीण छात्र एवं छात्राओं पर जनसंचार माध्यमों के प्रभाव के प्राप्तांकों का मध्यमान क्रमशः 102.17 व 118.93 है तथा दोनों समूहों का मानक विचलन क्रमशः 13.181 व 8.326 है। दोनों समुहों की मानक त्रुटियों का अंतर 2.846 तथा मध्यमानों का अंतर 16.76 है। दोनों समूहों के प्राप्ताकों का आलोचनात्मक अनुपात (टी) 5.88 है जो कि 58 स्वतंत्रता के अंश के हेतु 0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक 2.66 से अधिक है। अतः परिकल्पना तीन अस्वीकृत होती है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि ग्रामीण छात्रों पर ग्रामीण छात्राओं की तुलना में जनसंचार माध्यमों का कम प्रभाव पडता है। इसका कारण है कि ग्रामीण छात्राएं घर पर अधिक समय तक रहती है। घर का काम करने के बाद जो समय उनके पास बचता उस समय में वह टेलीविजन, रेडियो पर कार्यक्रम देखती और सुनती है। कारण वह छात्रों से आगे है।

शोध की शैक्षिक निहितार्थ

1. **शोधकर्त्ता के लिए** – प्रस्तुत शोध कार्य भावी शोधकर्ताओं के लिए एक आधार प्रस्तुत करेगा। जिससे भविष्य में इस समस्या के विभिन्न आयामों पर अनेक शोध कार्य किये जा सकेंगे।
2. **शिक्षकों के लिए** – प्रस्तुत शोध अध्यन शिक्षकों को सही जानकारी प्रदान कर सकेगा तथा संचार व उसके महत्व के बारे में स्पष्टीकरण दे सकेगा और इससे शिक्षक अपनी सकारात्मक संचार रूची में बाधक तत्वों को दूर कर सकेंगे। इससे शिक्षकों का अध्यापन प्रभावशाली हो सकेगा और छात्रों का सर्वांगीण विकास में सहायता मिल सकेगी।
3. **छात्रों के लिए** – चूंकि छात्र राष्ट्र का भविष्य होते है, अतः यह कहना अतिशयोक्ति न होगी कि अगर छात्रों का सर्वांगीणविकास हो सके और वे सामर्थ्यवान बन सके तो देश का भविष्य अत्यंत ही समृद्ध व सुरक्षित होगा। शिक्षक राष्ट्र के मेरूदण्ड होते हैं शिक्षक अगर जनसंचार के साधनों के प्रति अच्छी व सकारात्मक सोच से परिपूर्ण होंगे तो छात्र भी कर्तव्यशील, क्षमतावान, ज्ञानवान व आत्मविश्वासपूर्ण बनेंगे। क्योंकि विद्यार्थी जनसंचार के साधनों के द्वारा अधिक सीखते है। साथ हो उनको राष्ट्र–अन्तर्राष्ट्रीय घटनाओं कि जानकारी भी मिलती है जिसका प्रयोग वह अपने जीवन में करे। और समाज को भी लाभ दे।

सन्दर्भग्रन्थ – सूची

पुस्तकें

1. अग्रवाल जे.सी. – शैक्षिक तकनिकी प्रबन्धन एवं मूल्यांकन, विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा, संस्करण 2005.
2. भूषण शैलेन्द्र–शैक्षिक तकनिकी विनोद पुस्तक मन्दिर, अनिल कुमार नवम् संस्करण 2004.
3. गोस्वामी बुद्धि प्रकाश–शैक्षिक तकनीकी एवं कक्षा कक्ष प्रबन्ध, त्रिवेदी सुधा, गर्ग ओ.पी स्वाति पब्लिकेशन जयपुर (2004)।
4. गुप्ता वाई. के. – शैक्षिक प्रौद्योगिकी, शिक्षा प्रकाशन जयपुर, संस्करण 2005.
5. जीत भाई योगेन्द्र – शिक्षा में नवाचार और नवीन प्रवृतियाँ, विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा, पंचम् संस्करण 2004–2005.
6. कुलश्रेष्ठ, एस. पी – शैक्षिक प्रौद्योगिकी के मुल आधार, वनोद पुस्तक मन्दिर आगरा, संस्करण 2000.
7. कपिल, एच. के. – सांख्यिकी के मूल तत्व, विनोद पुस्तक मन्दिर, नविनतम संस्करण 2008.
8. मित्तल, सन्तोष – शैक्षिक तकनीकी एवं कक्षा–कक्ष प्रबन्ध, कॉलेज बुक हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, संस्करण 2007.
9. पारसर, मधू– शैक्षिक तकनीकी प्रबन्ध, कॉलेज बुक शर्मा, नमिता हाऊस, प्रथम संस्करण 2007.
10. पाण्डे रामशकल – पाश्चात्य एवं भारतीय शिक्षा दर्शन, आर. लाल बुक डिपो मेरठ, संस्करण 2000.
11. राय पारस नाथ – अनुसंधान परिचय, प्रथम संस्करण 1973, द्वादशम् संस्करण 2008.
12. शर्मा श्रीमती आर. के.– उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षा, राधा शर्मा एच. एस. प्रकाशन मन्दिर आगरा, संस्करण 2005.
13. शर्मा आर. ए. – अनुदेशात्मक एवं शिक्षण तकनीकी, सूर्या पब्लिकेशन, संस्करण 2005.
14. शर्मा सन्दीप – शैक्षिक तकनीकी कक्षा–कक्ष प्रबन्ध, शिक्षा प्रकाशन जयपुर, संस्करण 2004–2005.
15. सरीन एवं सरीन – शैक्षिक अनुसंधान विधियाँ, अग्रवाल पब्लिकेशन, चतुर्थ संस्करण 2008.
16. सिहं, रामपाल – शैक्षिक अनुसंधान एवं सांख्यिकी, शर्मा, ओ.पी अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा–2, तृतीय संस्करण 2007–2008.
17. त्यागी जी.एस.डी. – शक्षा के दार्शनिक एवं सामाजिक आधार अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा–2, पंचम संस्करण 2007.
18. त्यागी, गुरूसरण दास–उदीयमान भारत में शिक्षा, विनोद नन्द, विजय कुमार,पुस्तक आगरा–2, संस्करण 2005.

19. पी. राजकुमार– अभिव्यक्ति एवं माध्यम, राष्ट्रीय शैक्षिक उप्पल श्वेता अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, प्रथम संस्करण 2006.
20. वर्मा, रामपाल सिंह – शिक्षण तकनीकी, मॉडर्न पब्लिकेशन, 1982–83.
21. पाण्डेय, रामशकल – शिक्षा के मूल सिद्धान्त, विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा, प्रथम संस्करण 2001.
22. बेस्ट जॉन डब्ल्यू – रिसर्च इन एजूकेशन, प्रिन्टर्स हॉल प्राइवेट, नई दिल्ली, 1993.
23. शर्मा, आर.ए. – शिक्षा अनुसंधान, आर.लाल बुक डिपो, मेरठ, संस्करण 2006.
24. रायजादा, बी.एस.– शिक्षा के अनुसंधान के आवश्यक तत्व, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी जयपुर, प्रथम संस्करण 1997.
25. दौड़ियाल सच्चिदानन्द– शैक्षिक अनुसंधान का विधिशास्त्र, व पाठक अरविन्द राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी जयपुर, संस्करण 1972.
26. वेल्डेलन – अण्डर एजूकेशन रिसर्च एनाइज रिवाईल्ड न्युयार्क, मैकग्राहिल बुक कम्पनी, संस्करण 1981.
27. गुड एन. एफ. –डवलपमेंट साइकोलॉजी, एवलटन तथा टाईलर न्यूयार्क, संस्करण 1962.
28. Buch M.B.- Third Survey of Research in Education 1978-1983, Vol. IV
29. Buch M/B/- Fourth Survey of research in Education 1983-1988 Vol.-I
30. Sharma R.S.- Encyclopedia of EducationSharma Anuradhavol.-2 Publisher Ajay Verma, First Published 2005.
31. Shrama R.S.- Encyclopedia of Education Ajay Verma vol.-6 Publisher, First Published 2005.
32. Indian Education“Sumitra L.G. 1991”. The Audio Cassette Project of Hoslangabad, District, Madhya Pradesh in collaboration with the government of Madhya Pradesh and UNICEF General Editor- Purim Chand, Volume xxx, Number-3 November 2004.
33. Journal of Indian Education - ROBIN, B. and HARRIS, J. 1998, correlates among computer using teachers educators, beliefs, teaching and learning preferences and demographies. Journal of Educational computing research 18 (1) pp. 15-35, Editor - Puran Chand, Volume xxx 1, Number -2 August 2005- N.C.R.I.
34. Journal of Indian Education - Mohanly, J. 1984, School radio programmes = their flctiuemess for pupils growth, published by deep and dup, Rajouri garden, New Delhi, Volume- xxx 1, Number -3 November- 2003.
35. Journal of Indian Education - J.W. Armsey and Noram Dahl 1972. "A, enquiry into the use of Instructional Technology "A Report on Ford Foundation Editor- Raj Rani, Volume 111 Number 4, February 2008, N.C.R.I.
36. Vellaisany- M "Effectiveness of multimedia approach in teaching science of upper primary level Indian Educational Review Academic Editor - M.Sen Gupta. Volume- 43, Number -1.
37. Taj Hassen "Levels of Aids Awareness Among students in Relation to mass Media Exposure and sex" Psycho lingua, Editor - Mahesh Bhargave, Vol.- 35, No. 2, July 2007.
38. Masthan N. Shailk- Communication technology for Promoting quality in self learning through distance Education, Psycho lincra, Editor - Mahesh Bhargava, Vol. 37, No. 2, July 2007.